SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 5, May-June 2025 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

यमुना घाटी (उत्तरकाशी) का पुरातत्व एवं संस्कृति : एक ऐतिहासिक अध्ययन

Dr. Vijay Bahuguna, Assistant Professor History,Vskc Govt Pg College Dakpatthar Vikasnagar Dehradun Uttarakhand.

DR. Asharam Bijalwan, Associate Professor History, GOVT.Degree College Mori, Uttarkashi, Uttarakhand

Daya Prasad, Assistant Professor Hindi, Rajendra Singh Rawat, GOVT.Degree College Barkot, Uttarakhand, Uttarakhand

Dr. Meenakshi rana, Assistant Professor, Hindi Department, Onkaranand Saraswati Govt.Degree College, Devprayag, Tehri Garhwal, Uttarakhand

Dr. Veer Raghav Khanduri, Assistant Professor, Sanskrit Department, VSKC GOVT.PG College Dakpatthar, Vikasnagar, Dehradun UTTARAKHAND

सारांश: भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत मूर्तिकला,अभिलेखों का पाठांतर, स्प्रिंग्सशेड मैनेजमेंट अथवा जल संसाधन बावड़ी से सम्बद्ध है,गंगनानी शिलालेख संस्कृत भाषा में अभिलिखित है,कुछ पंक्तियां मिट चुकी हैं।गंगनानी स्थित कुंड का ऐतिहासिक महत्व रहा है।रॉक पेंटिंग में परिलक्षित पिक्टोग्राफ से जान पड़ता है कि भाषा का विकास भी उपर्युक्त पेंटिंग में प्रतिबिंबित होता है।यमुना घाटी का पुरातत्व लाखामंडल की ईश्वरा की प्रशस्ति,केदार की प्राचीन मूर्ति,छगलेश का अभिलेख ,पुराला की रॉक पेंटिंग,कप मार्क्स,यज्ञ वेदिका खासा महत्व रखता है।शोधार्थियों को भाषा विज्ञान का अध्ययन भी किया जाना चाहिए,इसी इलाके में जौनपुरी,जौनसारी और रवाई की भाषा समृद्ध है।

यमुना घाटी (उत्तरकाशी) में पिछले दो दशकों से रॉक पेंटिंग,कप मार्क्स,अभिलेख और मूर्तिकला से संबंधित अवशेष मिले हैं,केदार मूर्तिकला पर आधारित है(Joshi et al.,2021) जो शैव परंपरा को प्रदर्शित करता है,गढ़ देवल गांव(बर्निगाड़) में २०२० के आसपास पाशुपत शिव की भांति लोक परंपरा पर आधारित है।मानसखंड और केदारखंड जल से सम्बद्ध है,कैलाश मानसरोवर एक झील है जहां से जीवन दायिनी नदियां निकलती हैं।यमुना घाटी में हुड़ोली नामक स्थल के पास ठढूंग गांव में ब्राह्मी लिपि में एक अभिलेख मिला है जिसका पाठांतर किया जा चुका है(Joshi et al.,2017).गंगनानी शिलालेख में एक संस्कृत में प्रस्तर अभिलेख मिला है,जो यमुनोत्री मार्ग पर यमुना नदी के बाएं तट पर बावड़ी/कुंड मिला

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 5, May-June 2025 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

है,जहां दूर दूर से लोग स्नान करने आते हैं,ब्रिटिश अन्वेषक जेम्स बैली फ्रेजर ने १८२० के आसपास गंगनानी गया था लेकिन कुंड और मंदिर का अस्तित्व नहीं था। परवर्ती काल में स्थानीय लोगों ने कुंड और मंदिर की सूचना दी होगी तभी गंगनानी का कुंड खोज निकाला।केदार की मूर्ति का गहरा संबंध गंगनानी से रहा है,शिव की जलधारा गंगनानी से जुदा हुआ है।ऐतिहासिक तथ्य बतलाते हैं कि केदार का संबंध जल से रहा है,जबकि गंगनानी कुंड का संबंध आस्था और पवित्रता का प्रतीक है।हेनवुड(१८५४) और कार्नेक ने द्वारहाट की शिलाओं में उथले गड्ढे कप मार्क देखे थे ठीक उसी तर्ज पर यमुना घाटी में कप मार्क्स देखने को मिलते हैं।यमुना घाटी पुरातत्वविदों,भाषाविदों और इतिहासकारों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा है

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 5, May-June 2025 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sjarah.com/

1. माडव देशाधिपतिर्तयोन्नमः पराभव जालमसेन भूमिपःतस्मात्मजा देवद्विजा-

2. - दि पूजने परावभूवाखिल धर्म……धीः। सेय मठाधीशनपत्परात्ती भषानिया-

3. भूमिप्रियाभवंद्या गार्हत यो वापि विनिर्मिता सौकाले ……..भागीरथ ……..रंगाय।

4……

5……

6……

अनुवाद सार

मण्डी देश के अधिपति जालमसेन (शासन 1826-38 ईस्वी पुत्र महाराज ईश्वरी सेन, समधी गढ़वाल महाराज सुदर्शन शाह, मातामह नाना गढ़वाल महाराज प्रताप शाह) की बेटी के लिये पूजन करने के लिये यहाँ के मठाधीश द्वारा वापी विनिर्माण का संकल्प किया।

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 5, May-June 2025 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

केदार की मूर्ति (लगभग ४५०० वर्ष)

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 5, May-June 2025 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

केदार की मूर्ति ;यह पाठ एक अनोखी मूर्ति का वर्णन करता है, जो चार भुजाओं वाली, भैंस-शिरोमणि (भैंस सिर वाली) और उर्ध्वलिंग (लिंग उत्तेजित अवस्था में) मानव आकृति है। इसकी ऊँचाई 73.66 सेमी और चौड़ाई 40.64 सेमी है। प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

भुजाएँ और धारण वस्तुएँ:

आगे की दोनों भुजाओं में त्रिशूल और माला धारण किए हुए हैं। पीछे की भुजाएँ एक हाथ से हाथी की गर्दन और दूसरे से उसकी पूँछ पकड़ती हैं — यह मुद्रा शांत और संतुलित है।

आभूषण और वस्त्र:

यह आकृति सर्पों, मनकों वाले करधनों, और यज्ञोपवीत (पवित्र जनेऊ) से अलंकृत है। कमर पर शेर की खाल की लंगोटी पहनी है, जिसमें शेर का सिर दाहिने जाँघ को ढकता है।

आकृति और रूप-स्वरूप:

भैंस का सिर, घनी दाढ़ी, और पूरे शरीर पर घने बाल इसकी मर्दानगी को दर्शाते हैं। मूर्ति उर्ध्वलिंग (उत्तेजित लिंग) के साथ दर्शाई गई है, जो पुरुषत्व और प्रजनन-शक्ति का प्रतीक है।

प्रतिमा-शिल्प के विशेष पहलू:

सिर बाईं ओर झुका हुआ है, और सींगों पर महीन रेखांकन (striations) हैं, जो यथार्थवादी एवं कथात्मक शैली को दर्शाते हैं।

तुलनात्मक अध्ययन:

विद्वान जैसे कि हिल्टेबिटल (Hiltebeitel) और ड्यूरस्ट (Duerst) इस आकृति की विशेषताओं की तुलना सिन्धु घाटी सभ्यता की मुहरों से करते हैं। वे भैंस की शारीरिक बनावट और प्रतीकों की सटीकता पर ध्यान देते हैं।

निष्कर्ष:

यह मूर्ति अत्यंत विलक्षण है और किसी भी स्थापित मूर्ति-परंपरा में फिट नहीं बैठती, जिससे यह प्रतीत होता है कि यह एक अपूर्व एवं संभवतः समन्वित (syncretic) शैली का प्रतीक है।

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 5, May-June 2025 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

देवल गांव से प्राप्त केदार(शिव) की प्राचीन मूर्ति से संबंधित स्थल

गढ़ देवल (उत्तरकाशी जिला)उत्तराखंड एक क्वार्टजिट से बने पहाड़ के अंदर केदार की मूर्ति मिली थी,केदार का संबंध जलधारा से है,नीति आयोग भी स्प्रिंग्स शेड मैनेजमेंट पर जोर दे रहे हैं

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 5, May-June 2025 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

देवल गांव से प्राप्त केदार(शिव) की प्राचीन मूर्ति से संबंधित स्थल

हुड़ौली पुरोला मार्ग से प्राप्त पिक्टोग्राफ

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 5, May-June 2025 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

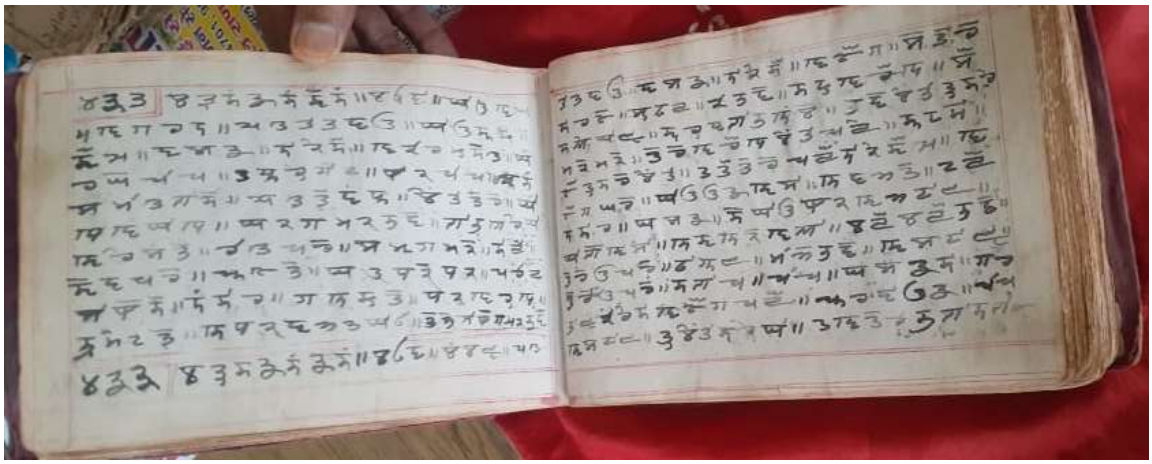

कश्मीरी विद्या या बागोई विद्या जौनसार बावर में प्रचलित है,जिसमें ब्राह्मण परिवारों के पास परंपरागत सांचा, बागोई विद्या है,जिसमें परंपरागत चिकित्सा पद्वति और तंत्र मंत्र का प्रयोग किया जाता है।कश्मीरी विद्या या सांचा या बागोई विद्या एक पौराणिक ग्रन्थ है,जिसमें लिपियों का उल्लेख हुआ है,जौनसार बावर,हिमाचल के सिरमौर क्षेत्र में पाण्डानी,चंद्रानी और पाबूची लिपि का पाठांतर किया जाना है।

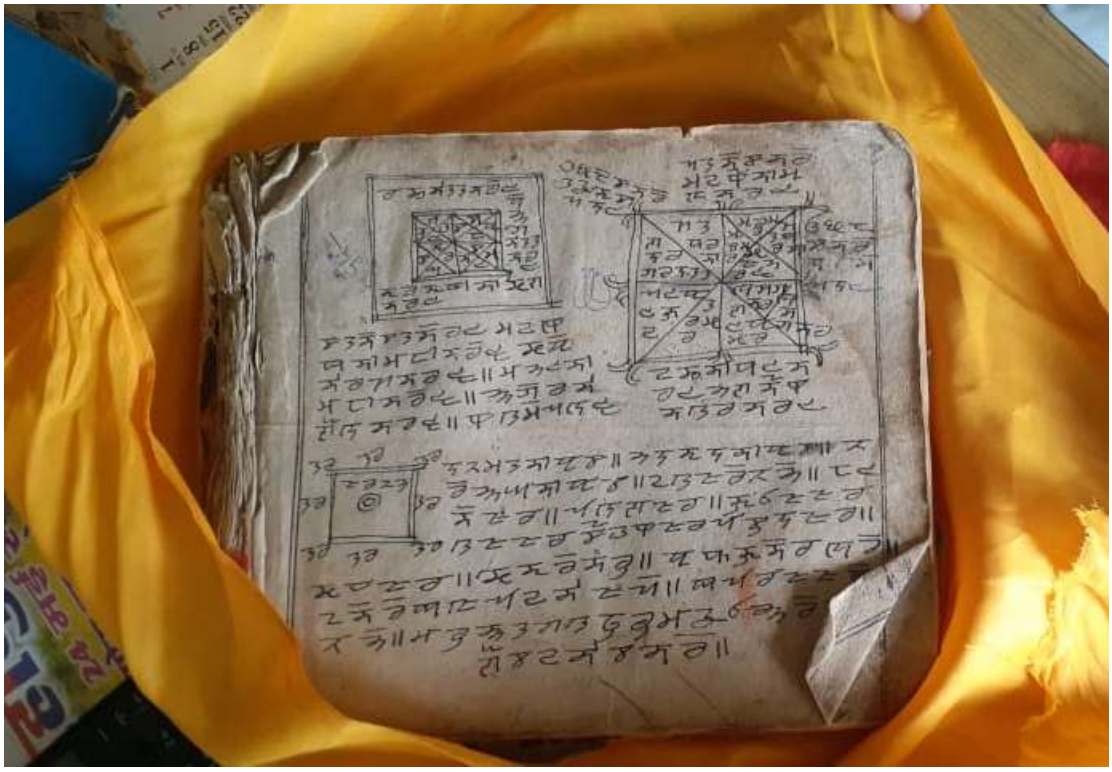

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES

An International Peer Reviewed, Refereed Journal

Vol. 2, Issue 5, May-June 2025 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692

Available online : https://sijarah.com/

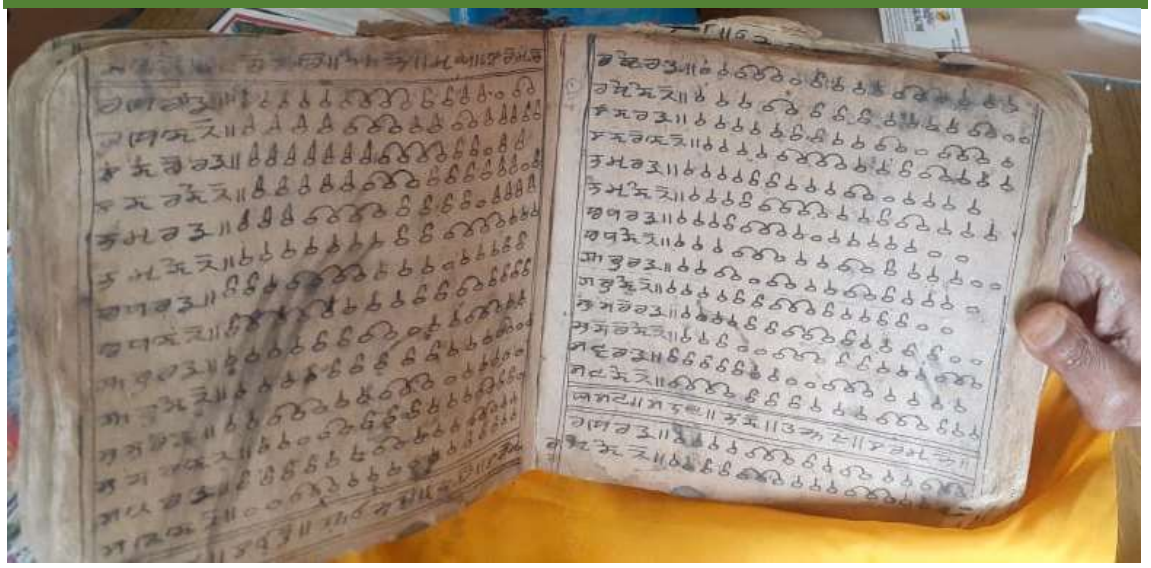

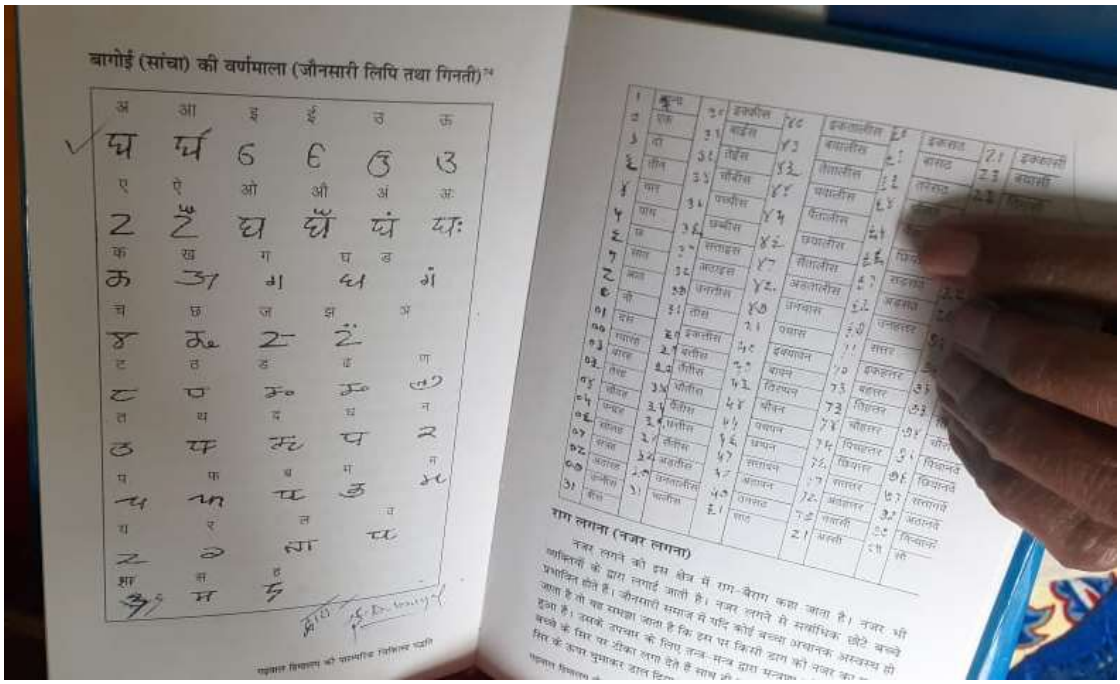

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES

An International Peer Reviewed, Refereed Journal

Vol. 2, Issue 5, May-June 2025 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692

Available online : https://sijarah.com/

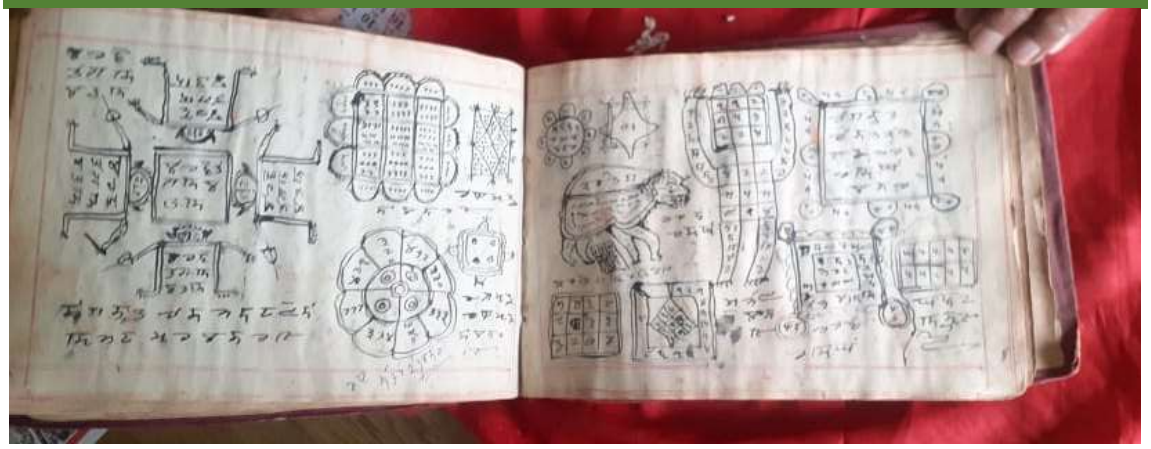

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES

An International Peer Reviewed, Refereed Journal

Vol. 2, Issue 5, May-June 2025 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692

Available online : https://sijarah.com/

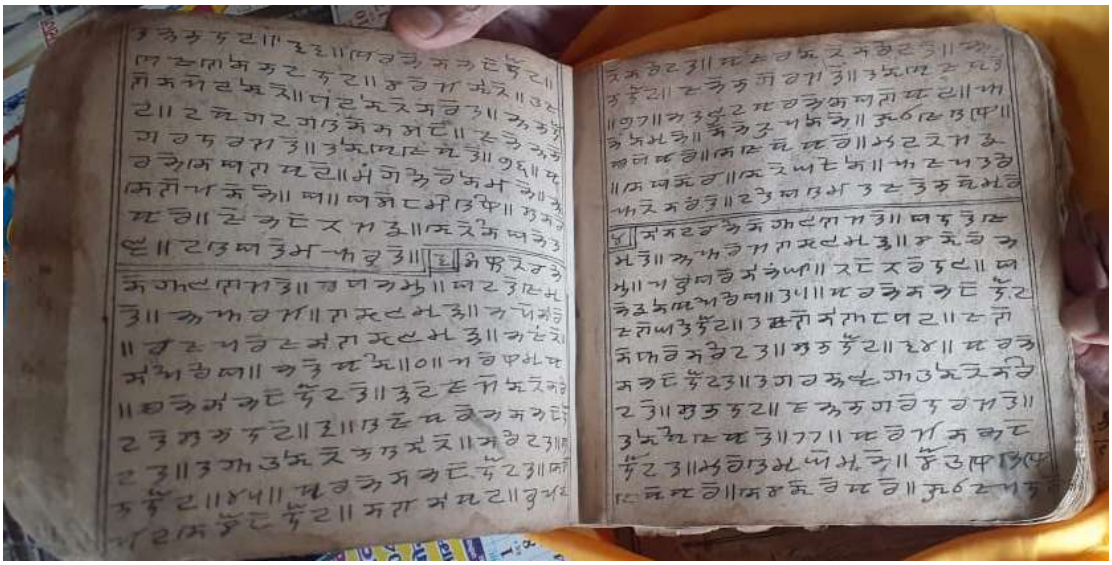

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES

An International Peer Reviewed, Refereed Journal

Vol. 2, Issue 5, May-June 2025 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692

Available online : *https://sijarah.com/*

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES

An International Peer Reviewed, Refereed Journal

Vol. 2, Issue 5, May-June 2025 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692

Available online : https://sijarah.com/

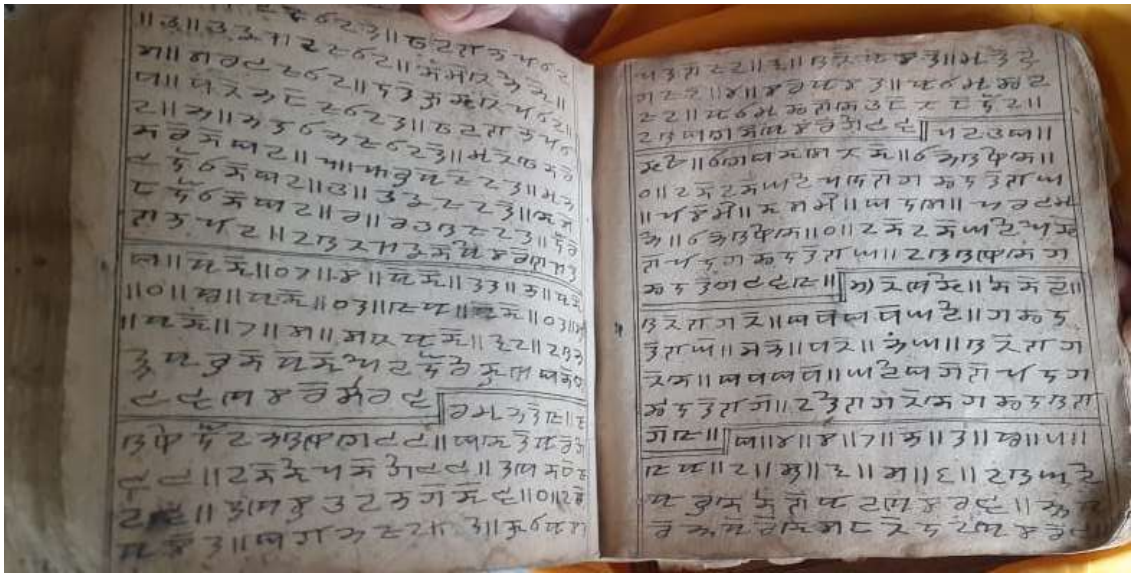

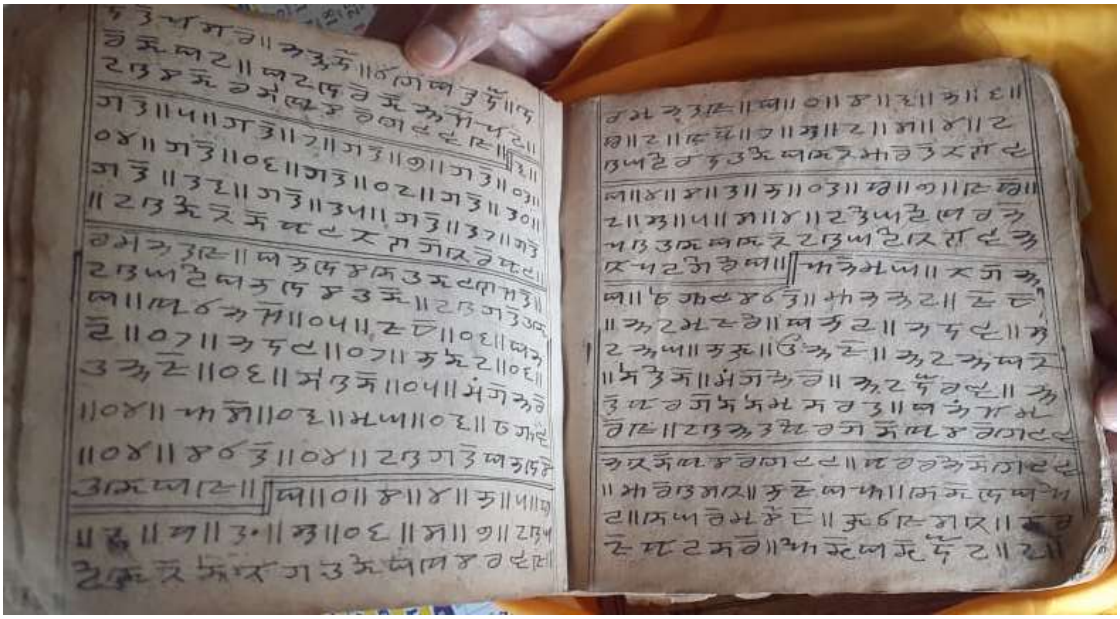

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 5, May-June 2025 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

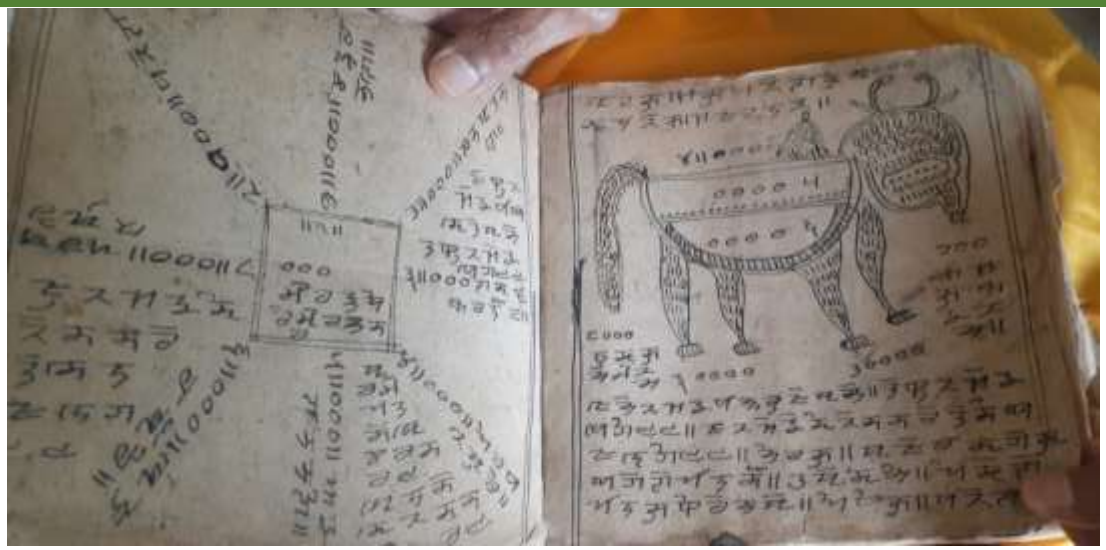

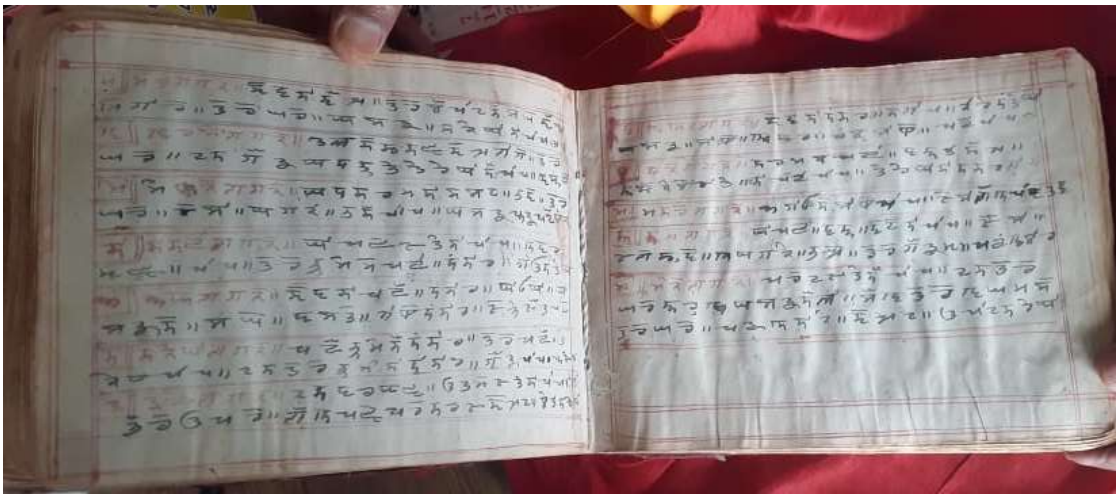

यहाँ पर प्रदत्त इमेज के मुख्य अंशों का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत है:

यह लेख उत्तराखंड (भारत) के गढ़वाल हिमालय के एक सुदूर क्षेत्र में पाई गई चार रोचक ब्राह्मणीय मूर्तियों का विश्लेषण करता है। इन मूर्तियों में से एक भैंस के सिर वाली मानव-आकृति की मूर्ति है जो एक दुर्लभ खोज है और किसी भी ज्ञात चित्रात्मक शैली से मेल नहीं खाती। यह प्राचीन परंपराओं की विविधता की ओर संकेत करती है। शिव को भैंस के रूप में दर्शाने की परंपरा 'केदारनाथ' की पुराणिक परंपराओं और उत्तराखंड की हिमालयी परंपराओं में मिलती है। ऐसी मूर्तियों की व्याख्या करना कठिन है क्योंकि ये विविध परंपराओं से जुड़ी होती हैं जिन्हें हमेशा पहचानना आसान नहीं होता।

उत्तराखंड हिमालय (भारत) दो पारंपरिक क्षेत्रों में बंटा हुआ है – केदारखण्ड और मानसखण्ड, जिनका नाम दो स्थल-पुराणों के आधार पर रखा गया है: केदारखण्ड और मानसखण्ड। दिलचस्प बात यह है कि दोनों

नामों का जल से संबंध है। "खण्ड" का अर्थ होता है एक क्षेत्र या घास का मैदान, विशेष रूप से ऐसा मैदान जो जल के नीचे हो। मानसखण्ड का संबंध मानसरोवर झील (तिब्बत) से है। यह क्षेत्र ब्रिटिशकालीन गढ़वाल रियासत के क्षेत्र से मेल खाता है और इसमें कुमाऊँ (उत्तराखंड) और सुदूर पश्चिम नेपाल की पूर्व रियासतें भी शामिल हैं।

यह लेख एक अनूठी मूर्ति की खोज पर चर्चा करता है जो महादेव को समर्पित है। यह मूर्ति एक पत्थर के मंच पर स्थित है और कुछ अन्य ब्राह्मणीय मूर्तियाँ भी उसके पास पाई गई हैं। यह मंच एक पुरानी लकड़ी की चौखट पर टिका है जो एक खड़ी पहाड़ी की ढलान पर बना हुआ है (देवाल गाँव, चमोली जिला, उत्तराखंड)। यह इलाका भूकंप संभावित क्षेत्र में आता है। मंदिर तक पहुँचने के लिए बिना रेलिंग वाली लकड़ी की फिसलन भरी लकड़ी का प्रयोग करना पड़ता है, जिससे यह बाहरी लोगों के लिए लगभग दुर्गम है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Joshi,M.P. et al.,(2017),Petroglyphs and rock paintings of Uttarakhand and Himachal Pradesh:A semiotic Stud in Sasasiba Pradhan and Dibisat B Garnayak(eds 2017),Rock art in India,Vol.II:447-67,New Delhi:B R.Publishing Corporation
2. Henwood,W.J.1856.Notice of the rock basons at Deo Dhoora near Almorah in Upper india.Edinburg New Philosphical Journal,New Series,IV:204-06
3. Joshi,M.P. et al..2015.Prehistoric rock engravings and painting:New Discoveries in Uttarakhand Himalaya.Manimahesh :A Journal of Himalayan studies ,6:1-10
4. Maheshwar P.Joshi et. al.,Newly discovered rock paintings from Berinag(Uttarakhand India) as mythograms",Revue d Etudes Tibetanies,no.73,Octobre,2024,pp.104-123
5. Zoller,Claus Peter.2016.Proto indo-European-Indo Aryan Himalayan Aryan Languages:New perspectives on some old Questions.Dehradun:Doon Library and Research Centre and M/S Bishan Singh Mahendra pal singh
6. Maheshwar,P.Joshi et,2021, al.,Lord of Kedara:A unique sculpture from Uttarakhand Himalaya,East and West ,ISMEO,Italy,
7. Rivett-Carnac,J.H.1877.Rough notes on some ancient sculpturing on rocks in Kumaon similar to those found in monoliths and rocks in Europe.Journal of Asiatic society of Bengal,XLVI(१):१-१५
8. Rivett-Carnac,1903,Cup marks as an archaic form of Inscription.The Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland,35 (३):517-543.
9. James Baille Fraser,Journal of a tour through part of the snowy range of the Himala Mountains ,and to the sources of river Jumna and Ganges